## २. आजे भरतभूमिमां....

(राग : मारा मन्दिरियामां त्रिशलानंद)

आजे भरतभूमिमां सोना-सूरज ऊगियो रे;
मारा अंतरिये आनन्द अहो! ऊभराय,
शासन-उद्धारक गुरु जन्मदिवस छे आजनो रे;
गुरुवर-गुणमहिमाने गगने देवो गाय,
विधविध रतनोथी वधावुं हुं गुरुराजने रे. आजे० १.

(साखी)

उमराळामां जनमिया ऊजमबा-कूख-नन्द;
कहान तारुं नाम छे, जग-उपकारी सन्त.

मात-पिता-कुळ-जात सुधन्य अहो! गुरुराजनां रे;
जेने आंगण जन्म्या परमप्रतापी कहान,
जेने पारणियेथी लगनी निज कल्याणनी रे. आजे० २.

(साखी)

'शिवरमणी रमनार तुं, तुं ही देवनो देव';
जाग्या आत्मशक्तिना भणकारा स्वयमेव.

परमप्रतापी गुरुअे अपूर्व सतने शोधियुं रे;
भगवंत् कुन्दऋषीश्वर चरण-उपासक सन्त,
अद्भुत धर्मधुरन्धर धोरी भरते जागिया रे. आजे० ३.

(साखी)

वैरागी धीरवीर ने अंतरमांही उदास;
त्याग ग्रह्यो निर्वेदथी, तजी तनडानी आश.

वंदुं सत्य-गवेषक गुणवन्ता गुरुराजने रे;
जेने अंतर उलस्यां आत्म तणां निधान,
अनुपम ज्ञान तणा अवतार पधार्या आंगणे रे. आजे० ४.

(साखी)

ज्ञानभानु प्रकाशियो, झळक्यो भरत मोझार;
सागर अनुभवज्ञाननो रेलाव्यो गुरुराज.

महिमा तुज गुणनो हुं शुं कहुं मुखथी साहिबा रे;
दुःषमकाळे वरस्यो अमृतनो वरसाद,
जयजयकार जगतमां कूहानगुरुनो गाजतो रे. आजे० ५.

(साखी)

अध्यातमना राजवी, तारणतरण जहाज;
शिवमारगने साधीने कीधां आतमकाज.

तारा जन्मे तो हलाव्युं आखा हिन्दने रे;
पंचमकाळे तारो अजोड छे अवतार,
सारा भरते महिमा अखंड तुज व्यापी रह्यो रे. आजे० ६.

(साखी)

सद्दृष्टि, स्वानुभूति, परिणति मंगलकार;
सत्यपंथ प्रकाशता, वाणी अमीरसधार.

गुरुवर-वदनकमळथी चैतन्यरस वरसी रह्या रे;
जेमां छाई रह्या छे मुक्ति केरा मार्ग,
अेवी दिव्य विभूति गुरुजी अहो! अम आंगणे रे. आजे० ७.

(साखी)

शासननायक वीरना नन्दन रूडा कूहान;
ऊछळ्या सागर श्रुतना, गुरु-आतम मोझार.

पूर्वे सीमंधरजिन-भक्त सुमंगल राजवी रे;
भरते ज्ञानी अलौकिक गुणधारी भडवीर,
शासन-संतशिरोमणि स्वर्णपुरे बिराजता रे. आजे० ८.

(साखी)

सेवा पदपंकज तणी नित्य चहुं गुरुराज!
तारी शीतळ छांयमां करीअे आतमकाज.

तारा जन्मे गगने देवदुंदुभि वागियां रे;
तारा गुणगणनो महिमा छे अपरंपार,
गुरुजी रत्नचिंतामणि शिवसुखना दातार छो रे;
तारां पुनित चरणथी अवनी आजे शोभती रे. आजे० ६.

*